स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
द्वितीय सेमेस्टर

14 SATURDAY JUNE 1

MAY 14

प्रश्न: — सूरदास में वर्णित दर्शन और भक्ति की व्याख्या करें :—

प्रश्नोत्तर : — विद्यार्थियों महाकवि सूरदास की रचना 'भ्रमरगीत' जहाँ वियोग वर्णन का अनूठा नमूना है, वहीं उनमें दार्शनिकता और भक्ति का मणिकांचन संयोग है। सूरदास जी ने अपने गुरु वल्लभाचार्य के दार्शनिक विचारों का अनुसरण किया है। सूरदास भी गुरु की तरह दार्शनिक दृष्टि से वेदान्त का अनुसरण किया वहीं भक्ति के क्षेत्र में प्रेमोपासना के अमर गायक कवि हैं। वल्लभाचार्य की मान्यता थी कि ईश्वर के अनुग्रह से आवागमन से छुटकारा मिल जाता है। इसी अनुग्रह को पुष्टि का नाम दिया गया, सूरदास जी भी इसी पुष्टिमार्ग के अनुगामी कवि थे

15 SUNDAY

भ्रमरगीत के अंतर्गत उद्धव ने संसार में व्याप्त ब्रह्म की जिस सत्ता का विरोध, सगुण रूप का निषेध किया, गोपियों ने उसको डटकर मुकाबला किया। गोपियाँ उस निर्गुण ब्रह्म पर विश्वास नहीं करती

2014

WK 25 167-198 MONDAY JUNE 16 14 JUL

जिसका स्वरूप कभी व्यक्त नहीं होता है, वे बड़ी दृढ़ता के साथ उद्धव से पूछती हैं—

"रूप न रेख, बरन जाके नहिं ताको हमें बतावत।
कैसे कहो, दास वैसे को तुम कबहुं हौं पावत ?

मुरली अधर धरत है सो पुनि गोधन वन-वन चारत।"

इसका तात्पर्य यह है गोपियाँ उद्धव से पूछती हैं कि जिनका कोई रूप, कोई आकृति, कोई रंग नहीं तो मैं उसे कैसे पहचानूं।

आचार्य वल्लभ की मान्यता थी कि जड़-चेतन जगत और जीव सभी उस विराट सत्ता के ही अंश हैं। उनका कहना है ये दृश्यमान प्रकृति हो या मनुष्य जाति या जड़ पदार्थ सबके सब उसी में विद्यमान हैं।

आचार्य वल्लभ ने भगवान के तीन रूपों पर विचार किया - ये हैं - रसावतार पूर्ण पुरुषोत्तम परब्रह्म श्रीकृष्ण पूर्ण पुरुषोत्तम, अक्षर ब्रह्म तथा अन्तर्यामी ब्रह्म। सूर ने इन तीनों रूपों का संकेत किया है और उनकी धारणा है कि जब-जब भक्तों पर संकट आता है वही ब्रह्म - जिसे वेद और उपनिषद नेति-नेति कहकर

2014

प्रकट करते हैं। सगुण रूप आराधना करके उनके संकटों को हरते हैं।
जैसे सूरदास जी ने अपने भ्रमरगीत में ज्ञान पर भक्ति,
प्रेम की विजय की उद्घोषणा किया है। उन्होंने सगुण
रूप लीला और उसकी क्रियाविधियों को स्वीकार कि-
किन्तु योग साधना के उस स्वरूप का खण्डन किया
जिसमें हृदय की रागात्मक वृत्तियों के लिए कोई स्थान
नहीं है। गोपियाँ उस निर्गुण ब्रह्म का उपहास करती हैं
जिसमें सगुण की रसात्मकता और दिव्यता का पूर्ण अभाव है।
उपासना की इस पद्धति से ऊबकर वे उद्धव से व्यंग्य भरे
शब्दों में पूछती हैं —

"निर्गुण कौन देस को बासी
मधुकर! हँसि समुझाए सौंह दे बूझति साँच न हाँसी"

सूर की भक्ति का निरूपण करने वाले आलोचकों
ने मुख्यतया उसके चार प्रकार के भाव बताये हैं - दास्य,
वात्सल्य, सख्य तथा दाम्पत्य। किन्तु शिशु की भक्ति के
दृष्टि से किसी ने वात्सल्य को वरीयता दी, किसी ने
सख्य भाव को तो दाम्पत्य भाव को और किसी ने
दास्य भाव को प्रधानता दी है। परंतु सूरसागर में

लगभग पाँच हजार पद मिलते हैं और इन पदों में उन्नत भावों को खोजने का प्रयास किया जाय तो इनमें वात्सल्य भाव के तीन सौ पद, बाललीला, सख्य भाव के लगभग चार सौ पद और अन्य विषय भी उनमें शामिल हैं सबसे अधिक दाम्पत्य भाव के लगभग तीन हजार पद मिलते हैं। इनमें मिलन और वियोग दोनों समाहित हैं इस प्रकार के आंकड़ों से स्वतः सिद्ध होता है कि सूर की प्रतिभा का सर्वाधिक उन्मेष दाम्पत्य के पदों में हुआ है। सच तो यह है कि जिस प्रेमलक्षणा भक्ति का उल्लेख किया जाता है उस भक्ति को आधार बनाकर सूर ने कान्ता भाव या माधुर्य भाव की रचना को जितनी गहराई और सहृदयता मिलती है वह अन्यत्र दुर्लभ है। कुछ विद्वानों के अनुसार सूर को अधिक प्रिय था और यही भाव सूर की भक्ति का सर्वाधिक प्रतिनिधित्व भी करता है।

सचमुच माना जाय तो माधुर्य भाव की [illegible] आधारभूत शिला प्रेमलक्षणा भक्ति है जिसे [illegible]

के [illegible] किया है । यह भाव [illegible]
के प्रारम्भ से ही देखने को मिलती है । आँगन [illegible]
करते कहूँ बालकृष्ण और (मारवन चोरी के [illegible]
से सम्बन्ध में [illegible] ढंग से [illegible] दिखाने [illegible]
[illegible] सिद्धान्त ही [illegible] है , [illegible]
देखे जा सकते है ।

सूरदास भक्ति में गोपियों की जिस आसक्ति का [illegible]
मिलता है वह रागानुगा भक्ति कही गयी है । [illegible]
से भक्त नारी और उनके अपने चित्त को हटाकर [illegible]
भगवान में केन्द्रीभूत करना चाहता है । इस [illegible]
में भक्ति रसामृत सिन्धु के अन्तर्गत श्री गोस्वामी [illegible]
भक्ति के दो भेद किये हैं - वे हैं (i) गौणी और [illegible]
परा भक्ति सर्वोच्च कोटि की और सिद्धावस्था की [illegible]
है । गौणी भक्ति दो प्रकार की होती है - (i) वैधी (ii) रागा-
नुगा । पहले के विधि निषेध्य हैं और दूसरा रागा-
20 [illegible] का आरित है ।

सूरदास गीत के जिस रागानुगा [illegible]

प्रेमलक्षणा भक्ति का प्राधान्य है, उसे गोपियों ने धीरे-धीरे: प्राप्त किया था। [illegible] वात्सल्य से ही सूर के कीर्तन का क्रम चलता रहा और वात्सल्य-सख्य की सीढ़ियाँ पार करके ही गोपियों ने माधुर्य भाव के अलौकिक आलंबन को प्राप्त किया। रागानुगा भक्ति में वैधी की भाँति मर्यादा का स्थान नहीं होता। भगवान की कृपा पर ही यह आश्रित है। भगवान का अनुग्रह ही इसका पोषण करता है - यही पुष्टिमार्ग भी है। इस कृष्ण प्रेम को पाने के लिए, उसे कायम रखने के लिए गुरुजनों, पतियों और माता-पिता की मर्यादा का भी ध्यान नहीं रखती हैं। उन्हीं के शब्दों में — मन, बच, क्रम हरि सौं धारि, पतिव्रत...
प्रेम योग तप साध्यो॥

मातु-पिता-हित प्रीति निगम पथ तजि दुख-सुख भ्रम नाख्यो॥

यह बात परम आश्चर्य वाली है कि वल्लभाचार्य से दीक्षित सूर का दास्य भाव कब वात्सल्य, सख्य और कांता भाव में बदल गया। गोपियों में श्रीकृष्ण के प्रति जो अनन्यता, आत्मसमर्पण और [illegible] विनयशीलता मिलती है इसका मूल कारण दास्य भाव की भक्ति का प्रभाव है।

[illegible] MAY 14 [illegible]

[illegible] आज्ञापित है । [illegible]

[illegible] की स्थापना [illegible]

[illegible] है । के इसके लिए कर्तव्य का [illegible]

[illegible] करती । [illegible] स्थिति में [illegible]

[illegible] पर [illegible] भी नहीं गया है ।

कुमार रजनीकान्त रंजन

23/7/20[illegible]

Scanned with CamScanner